आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

दैनिक समाचार–पत्र

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 9 • अंक-2355 • उदयपुर, शनिवार 05 जून, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

समाचार–जगत्
सकारात्मक व जनहितार्थ खबरें

रेडियो तरंग प्रसारित करेंगी ड्रोन का डेटा

जल्द ही जापान एक ऐसी प्रणाली विकसित कर सकता है जिससे पुलिस अधिकारी आकाश में उड़े रहे संदिग्ध ड्रोन के मालिक, उड़ान की अनुमति और अन्य जानकारी से संबंधित डेटा तुरंत हासिल कर सकेंगे। ड्रोन के बढ़ते इस्तेमाल के चलते ऐसी प्रणाली का मुख्य उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि ड्रोन प्रशिक्षित लोगों द्वारा और जरूरी प्रक्रिया से गुजरने और अनुमति लेने के बाद ही उड़ाए जा रहे हैं या नहीं, ताकि संदिग्ध ड्रोन को तुरंत चिह्नित किया जा सके। माना जा रहा है कि यह प्रणाली वर्ष 2022 की शुरूआत तक जारी की जा सकती है।

सिविल एयरोनॉटिक्स कानून की समीक्षा की गई थी, जिसके बाद ड्रोन स्वामियों के लिए नाम, पता, डिवाइस का सीरियल नंबर और अन्य जानकारी का भू परिवहन और मंत्रालय पंजीकरण अनिवार्य कर दिया जाएगा। संशोधित कानून जून 2022 तक लागू कर दिया जाएगा। हालांकि कार की लाइसेंस प्लेट की तरह ही ड्रोन पर रजिस्ट्रेशन कोड को दर्शाना जरूरी होगा, इसे जमीन से देखना लगभग असंभव है। इसलिए मंत्रालय की योजना है कि हर ड्रोन पर एक ऐसी डिवाइस लगाई जाए जो इस रजिस्ट्रेशन कोड और अन्य डेटा को रेडियो तरंगों के माध्यम से प्रसारित करेगी। नई प्रणाली के तहत, किसी संदिग्ध ड्रोन को चिह्नित करने पर पुलिस अधिकारी, कोस्ट गार्ड अफसर, प्रमुख केन्द्रों पर तैनात सुपरवाइजर रेडियो तरंगों से प्रसारित कर जानकारी को अपनी मोबाइल डिवाइस पर प्राप्त कर सकेंगे। प्राप्त जानकारी के आधार पर संबंधित अधिकारी सरकारी एजेंसियों से अनुमति संबंधित अन्य जांच कर सकेंगे। रेडियो तरंगों से ड्रोन की पोजिशन भी हासिल होगी, जिससे स्वीकृत लाइट रूट की भी पुष्टि की जा सकेगी।

सावधानी आवश्यक है कम्प्यूटर पर काम करने वाले वालों हेतु

आजकल स्कूल कॉलेजों, दतरों में कम्प्यूटर का प्रयोग बढ़ता जा रहा है जिससे आंखों को सबसे अधिक नुकसान पहुंच रहा है। कैलिफोर्निया के नेत्र विशेषज्ञ डॉ. डोनाल्ड के अनुसार इस नुकसान को कुछ हिदायतें अपनाकर रोका जा सकता है। अपनी आंखों को बीच–बीच में झपकाते रहें। कम्प्यूटर पर काम करते वक्त एडजस्टेबल कुर्सी का प्रयोग करें। कम्प्यूटर पर काम करते वक्त हर आधे घंटे के पश्चात् दो मिनट का ब्रेक लें इससे आपकी आंखों को कुछ देर के लिए आराम मिलेगा। कम्प्यूटर स्क्रीन की स्थिति को भी ध्यान में रखना बहुत आवश्यक है। कम्प्यूटर स्क्रीन आंखों से 10–15 डिग्री नीचे होनी चाहिए। कम्प्यूटर स्क्रीन को हमेशा साफ रखें। उस पर धूल के कण या आपकी उंगलियों के निशान नजर नहीं आने चाहिए। स्क्रीन को उस जगह लगाए जहां ट्यूबलाइट या खिड़की की परछाई न पड़े। कम्प्यूटर पर काम करते वक्त आंखों पर अधिक जोर न पड़े, इसलिए एंटीरिलेक्शन लेंसों का प्रयोग करें। हर छः महीनों के पश्चात् आंखों की जांच अवश्य करवायें और सही नबर का चश्मा लगाएं।

सेवा–जगत्
सेवा में सतत्, आपका नारायण सेवा संस्थान

प्रतिदिन हजारों संक्रमितों तक पहुंच रही संस्थान

नारायण सेवा संस्थान ने कोरोना विपदा की दूसरी लहर में कोरोना प्रभावितों के लिए 17 अप्रैल से सेवा के कई प्रकल्प शुरू किए है। रोज हजारों संक्रमितों और परिजनों के लिए संस्थान की सेवाएं बहुत ही कल्याणकारी सिद्ध हो रही है।

संस्थान अध्यक्ष सेवक प्रशान्त भैया ने बताया कि पूज्य गुरुदेव कैलाश मानव जी व गुरूमाता कमला देवी जी के सानिध्य में कोरोना महामारी में परेशान और हताश बीमारों के सेवार्थ मुहिम चलाने का निर्णय किया। जिसमें घर–घर भोजन, कोरोना दवाई किट, एम्बुलेस और ऑक्सीजन की निःशुल्क सेवाएं 17 अप्रैल से शुरू की। जो आज उदयपुर के अलावा मेरठ (यूपी) और परभणी (महाराष्ट्र) में भी संचालित है।

इस सेवा में संस्थान की लगभग 80 सदस्य टीम जुटी है। हेल्पलाइन नम्बर पर सूचना मिलते ही टीम मेम्बर बीमार की सेवा में दौड़े चले जाते है। उन्होंने कहा कि यह सेवा संस्थान निरन्तर जारी रखेगा। बेरोजगार और मजदूरों भाइयों के लिए राशन सामग्री की सेवा भी निरन्तर जारी है।

केन्या के 98 दिव्यांगों को कृत्रिम अंग

दिव्यांगजन को कृत्रिम पांव एवं शूज पहनाते हुए डॉक्टर

मोम्बासा सिमेन्ट लिमिटेड के मैनेजिंग डायरेक्टर श्री हंसमुख भाई पटेल की प्रेरणा से नारायण सेवा संस्थान ने 23 अप्रैल 2021 को मोम्बासा में कृत्रिम अंग वितरण शिविर आयोजित किया। जिसमें 98 दिव्यांग बन्धु जो अंगविहिन थे उन्हें कृत्रिम अंग हाथ–पैर दिए। संस्थान अध्यक्ष प्रशान्त अग्रवाल ने बताया कि एसोसिएशन ऑफ फिजीकल डिसएबल्ड इन केन्या की टीम के डॉक्टर ने शिविर में आए दिव्यांगों को कृत्रिम अंग लगाए। इस दौरान जयेन्द्र हिरानी, रमेश भाई, नारायण भाई एवं उनकी टीम उपस्थित रहे एवं निःशुल्क सेवाएं दी।

नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

कोरोना संक्रमितों के सेवार्थ नि:शुल्क सेवाएं

ऑक्सीजन सिलेंडर सेवा

अब तक नि:शुल्क 223 ऑक्सीजन सिलेण्डर दिये

'घर – घर भोजन' सेवा

अब तक घर-घर नि:शुल्क 44,044 भोजन पैकेट वितरित

कोविड पॉजिटिव बीमारों को कोरोना किट सेवा

अब तक नि:शुल्क 2206 कोरोना किट संक्रमितों को दिये

बीमार को एम्बुलेंस सेवा

बीमार को हॉस्पीटल पहुँचाते संस्थान कर्मी अब तक 254 जन लाभान्वित

हैड्रोलिक बेड सेवा

118 जन को हैड्रोलिक बेड कराये उपलब्ध

कोरोना प्रभावित 29,948 मजदूर परिवारों को राशन वितरण

'नारायण सेवा संस्थान द्वारा कोरोना सेवा में सेवा साधक'

प्रेरणा

पद्मश्री आदरणीय कैलाश जी 'मानव'
आदरणीया कमलाजी
आदरणीय प्रशांत भैया जी
आदरणीया वदंना भाभी जी
आदरणीय पलक जी
आदरणीय महर्षि जी

सेवा साधना

1	दल्लाराम जी पटेल	10	हितेष जी सेन	19	राजेन्द्र जी शर्मा	28	रणवीर जी	37	विवेक जी
2	रोहित जी तिवारी	11	हरीश जी	20	शांतिलाल जी	29	कन्हैया जी	38	मानसिंह जी
3	दिनेश जी वैष्णव	12	वर्षा जी	21	प्रवीण जी यादव	30	जगदीशचन्द्र जी	39	मोहन जी
4	राकेश जी पानेरी	13	राकेश कुमार मोची	22	उदयसिंह जी	31	प्रकाश जी	40	प्रकाश जी
5	मुकेश जी शर्मा	14	लोगर जी डांगी	23	कान जी सिंह	32	शंकर जी	41	फतहलाल जी
6	रजत जी गौड़	15	मनीष जी हिन्डोनिया	24	दलपत जी	33	गोपाल जी	42	मुन्ना सिंह जी
7	मोहित जी	16	प्रताप जी दर्जी	25	वरदीचन्द्र जी	34	प्रेम जी	43	दिग्विजय जी
8	प्रशांत जी पंचोली	17	शरद जी वैरागी	26	बबलू जी	35	हिरालाल जी	44	भगवान जी गौड
9	लालसिंह जी	18	राकेश जी मीणा	27	भरत जी	36	लाकेश जी	45	संतोष जी

सम्पादकीय

नर सेवा–नारायण सेवा

नर से नारायण बनने की यात्रा अब तक का परम लक्ष्य रहा है। परमात्मा ने हरेक मनुष्य में ऐसी पात्रता भर दी है कि वह अपनी निहित शक्तियों को जागृत करके नारायण बनने का सौभाग्य पा सकता है। यह सही है कि हरेक नर नारायण नहीं बन सकता। पर वह नर तो है ही। नारायण बनने की प्रारंभिक सीढ़ी तो वह है ही। हम नारायण को न पहचान सकें, उन तक हमारी चेतना न पहुंच सकें। तब भी हम नर को तो देखते ही हैं। किसी भी नर की सेवा नारायण की सेवा का ही स्वरूप है। किसी नर के द्वारा किसी नर की सेवा अध्यात्म पथ का प्रथम चरण है। जो चरण चल पड़ते हैं वे मंजिल तक पहुँचते ही हैं। इसलिए नर सेवा को नारायण सेवा ही माना गया है। नारायण सेवा का तो कोई निर्धारित विधान है। एक सधी हुई परम्परा है। पर नर सेवा के लिए तो न किसी परम्परा की आवश्यकता है। और न ही किसी विधि–विधान की। जो भी जरूरतमंद लगे उसकी किसी भी प्रकार की सेवा संभव है। यह सेवा बड़े पैमाने पर हो या लघु, दीर्घकालीन हो या तात्कालिक, प्रकट हो या अप्रकट, नियमित हो या अनियमित इससे कोई अंतर नहीं पड़ता है। नारायण सेवा से कल्याण होगा पर न जाने कब? किन्तु नर सेवा से तो तुरन्त संतुष्टि व आत्मिक प्रसन्नता होती है। इसलिए नारायण सेवा न भी हो तो नर सेवा तो कर लें। नर सेवा भी नारायण तक ही पहुँचती है।

कुछ काव्यमय

सेवा की परम्परा तो,
मानव के साथ जन्मी है।
सेवा से कठोर में भी
उत्पन्न होती नमी है।
सेवा करना मानवता है,
यही लक्ष्य जीवन का है।
वरना कुछ भी पा लें,
फिर भी लगती रहे कमी है।

- वरदीचन्द राव, अतिथि सम्पादक

अपनों से अपनी बात

अनमोल है विनम्रता

विनम्र व्यवहार और मन की कोमलता किसी भी हथियार से अधिक शक्तिशाली है। कोमल हृदय व्यक्ति का अस्तित्व उसकी मृत्यु के बाद भी रहता है।

जिदंगी का मूल मंत्र है, प्यार दो और प्यार लो। भगवान को वाणी में कठोरता पसन्द नहीं, इसीलिए उन्होंने जुबान को लचीली बनाया। लेकिन ये जो घाव करती है, वैसा लोहा भी नहीं कर सकता। ये अपने कटु शब्दों से एक पल में अपनों को पराया कर देती है। तो किसी को स्नेह और आत्मीयता की माला में गूंथ भी देती है। इस जुबान से महाभारत जैसे, बड़े–बड़े युद्ध हुए तो कई बिछड़े परिवार भी एक हो गए। एक दिन मुख में 32 दाँतों के बीच रहने वाली जीभ बोली–भाइयों! तुम 32 हो। मैं तुम्हारे बीच रहती हूँ। बहुत लचीली और मुलायम हूँ। मेरा ध्यान रखना। सभी दांत एक साथ बोले– बहना! हम 32 हैं और तू अकेली है। फिर भी हम पर भारी है। तू हमारा ध्यान रखना। जीभ ने पूछा– मैं तुम्हारा ध्यान कैसे रख सकती हूँ? दाँत बोले– किसी को भी उल्टा–सीधा बोल कर, तुम तो अन्दर चली जाती हो, लेकिन भुगतना हमें पड़ता है।

बहना! किसी को कुछ गलत मत बोलना, नहीं तो हमें घर–बार छोड़कर बाहर आना पड़ेगा। हमेशा सबसे मीठा बोलना। विनम्र व्यवहार और मन की कोमलता किसी भी हथियार से अधिक शक्तिशाली है, जहाँ कठोरता का जल्दी नाश होता है, वहीं कोमलता लम्बे समय तक रहती है। भीष्म पितामह शरशय्या पर थे। धर्मराज युधिष्ठिर ने आग्रह किया कि पितामह उन्हें जीवनोपयोगी शिक्षा दें। भीष्म ने कहा कि नदी जब समुद्र तक पहुँचती है तो बहाव के संग बहुत सी चीजों को बहाकर ले जाती है। एक दिन समुद्र ने नदी से प्रश्न किया–तुम बड़े–बड़े पेड़ों को अपने प्रवाह में ले आती हो, लेकिन क्या कारण है कि छोटी सी घास, कोमल बेलों व नरम पौधों को बहाकर नहीं ला पाती। नदी का उत्तर था–मेरे बहाव के दौरान बेलें झुक जाती हैं और रास्ता दे देती हैं, लेकिन वृक्ष अपनी कठोरता के कारण यह नहीं कर पाते।

–कैलाश 'मानव'

करुणा से भरपूर रहें

जिसकी आत्मा शुद्ध होती है, धर्म उन्हीं के पास ठहरता हैं। व्यक्ति का मन दूसरों के प्रति सदा करुणा से भरा रहना चाहिए।

तीर्थंकर भगवान महावीर सत्संग के लिए आने वालों से कहते थे– गृहस्थ मनुष्य को गलत तरीके से धन अर्जित नहीं करना चाहिए। परिवार के मोह में आदमी बुरे से बुरा पाप करने में भी नहीं हिचकिचाता, पर जब उसका परिणाम भोगने का समय आता है तब वह अकेला ही दुःख भोगता है। अतः मोह, ममता और लोभ को त्यागकर किसी भी क्षण कोई कोई गलत काम न हो, इसका प्रयास करना चाहिए।

साधकों को सदाचार का पूर्ण पालन करना चाहिए। जो निष्कपट और सरल होते हैं, उन्हीं की आत्मा शुद्ध रहती है और जिसकी आत्मा शुद्ध होती है, उसी के पास धर्म ठहरता है। एक व्यक्ति ने तीर्थंकर से पूछा, "दुःख क्यों सताते हैं?" भगवान ने उत्तर दिया, "प्राणी– अपने दुष्ट कर्मों के कारण ही दुःखी होता है। जो सब प्रकार का त्याग करता है।

वही सच्चा संन्यासी है। आदिशंकराचार्य भी यही कहते थे कि जो सत्य को आत्मसात् करता है, वही संन्यासी है। भगवान महावीर स्वामी ने कहा– जियो और जीने दो। एक बार महावीर स्वामी कहीं से गुजर रहे थे। आगे भयानक जंगल था, जिसमें एक विषैला नाग था। लोगों ने उन्हें रोका और कहा कि उस रास्ते से मत जाइए, क्योंकि इस रास्ते में विषैला सर्प है, जो लोगों को डस लेता है। लेकिन करुण हृदय महावीर नहीं माने और उसी राह आगे बढ़ गए। जब स्वामीजी जंगल में पहुंचे, तो नाग ने उन्हें डस लिया। दंशस्थल में जहां रक्त निकलना चाहिए वहां से दूध की धारा बह निकली।

माँ के शरीर में मांस होता है, रक्त होता है, लेकिन अपने बच्चों के लिए, स्तनों से सिर्फ दूध ही निकलता है। भगवान महावीर स्वामी में प्राणी मात्र के लिए इतना प्रेम था, जो एक माँ का अपने बच्चों के प्रति होता है। इसीलिए जब नाग ने उनको काटा तो उनके पैर से खून की जगह दूध निकलने लगा।

– सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

बचपन में कैलाश माता–पिता के साथ ऋषिकेश गया था। अचानक उसकी स्मृतियां उसके मस्तिष्क पटल पर उभर आई। वह बहुत छोटा था, फिर भी इतना उसे याद था कि वहां स्वर्गाश्रम में जाते थे।

उपर की मंजिल पर ठहरते थे और माताजी एक रस्सी से बाल्टी नीचे लटका देती थी, सामने मां गंगा क दर्शन होते थे, माताजी को कोई भूखा जाते नजर आता तो वे उसे आवाज देकर रोकती और बाल्टी में फुल्के, फल वगैरह रख कर नीचे उतार देती। वो वहीं बैठकर खाते तो माताजी बहुत प्रसन्न हो जाती थी।

कलकत्ता में ट्रेनिंग पूरी करने के बाद कैलाश ने एक माह की छुट्टी ले शांतिकुंज जाने का निश्चय किया। पोस्टिंग अभी हुई नहीं थी इसलिये उसे छुट्टी भी आसानी से मिल गई। हरिद्वार में शांतिकुंज पहुंचा तो उसे पता लगा कि वहां धर्म तंत्र से लोक शिक्षण विषय पर महीने भर का प्रशिक्षण चल रहा है, उसने यह प्रशिक्षण प्राप्त करने की इच्छा व्यक्त की तो उसे अनुमति मिल गई। उसे एक कमरा दे दिया गया।

प्रशिक्षण के दौरान सभी को आश्रम में सेवा कार्य के संकल्प लेने पड़ते थे। कैलाश ने प्रतिदिन 5 शौचालय साफ करने का संकल्प लिया। वह सुबह 3 बजे ही उठ जाता और सफाई में लग जाता। शौचालय व स्नानाघर एक साथ ही थे। तब कमोड तो होते नहीं थे, छिटकमा शौचालय थे। घन्टे भर में वह कार्य निपटा लेता था। उसके साथ अन्य प्रशिक्षु भी यह कार्य करते थे।

स्नान–ध्यान करने के बाद यज्ञ में बैठ जाते। 8 बजे अल्पाहार शुरू हो जाता। ठीक 10 बजे कार्यक्रम शुरू हो जाता जो सायं 5 बजे तक चलता। बीच में घन्टे भर भोजन का विराम होता। कैलाश अत्यन्त मनोयोग से प्रशिक्षण व परिचर्चाओं में भाग लेता। उसे धर्म के वैज्ञानिक स्वरूप, कर्म काण्ड, इसकी क्रियाओं की व्याख्या आदि में बहुत कुछ जानने को मिला। **अंश-27**